15. राष्ट्रीय राजनीति (1935-39)

भारत स्वतंत्रता आन्दोलन में वामपंथी राजनीति का उदय

- 1917 ई. में रूसी क्रांति की सफलता ने संपूर्ण विश्व में समाजवादी विचारधारा को लोकप्रिय बनाने का कार्य किया।
- भारत में धीरे-धीरे मार्क्सवादी समाजवाद विचारधारा लोकप्रिय हो रही थी। कांग्रेस के अंदर भी वामपंथी राजनीति को प्रोत्साहन मिला। इस प्रोत्साहन के सूत्रधार जवाहर लाल नेहरू थे।
- जवाहर लाल नेहरू को 1926 ई. में यूरोप जाने का मौका मिला। 1927 ई. में उन्हें औपनिवेशिक उत्पीड़न तथा साम्राज्यवाद के खिलाफ ब्रुशेल्स में हुए अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में कांग्रेस के प्रतिनिधि के तौर पर शामिल होने का मौका मिला।

⇒ ब्रुशेल्स में नेहरू को 'लीग अगेन्स्ट इम्पीरियलिज्म एण्ड फॉर नेशनल इंडिपेंडेंस' की कार्यकारिणी समिति का सदस्य नियुक्त किया।

⇒ जवाहर लाल नेहरू ने सोवियत रूस का भी दौरा किया जहाँ वे सोवियत सरकार के विकास कार्य से काफी प्रभावित हुए। अब उन पर समाजवाद का गहरा प्रभाव पड़ा।

For More Book Download Here - http://GKTrickHindi.com Scanned by CamScanner

• इन्ही विचारधाराओ के तले [redacted] उन्होने 1929 के लाहौर अधिवेशन की अध्यक्षता की तथा स्पष्ट रूप से घोषित किया कि मैं समाजवादी हूं। 1937 के लखनऊ अधिवेशन मे इन्होने घोषित किया कि समाजवादी ही सभी समस्याओ की कुंजी के समान है।

• नेहरू को कांग्रेस के अंदर समाजवादी विचारधारा के प्रसार मे सुभाष चन्द्र बोस जैसे मजबूत सहयोगी का साथ मिला। अगस्त 1928ई मे दोनो नेताओ ने मिलकर कांग्रेस के अंदर एक प्रभावक गुट के रूप मे एक नई पार्टी "इंडिपेंडेंस फॉर इंडिया लीग" की स्थापना की। इस संगठन का उद्देश्य था — डोमिनियन स्टेटस की अवधारणा का विरोध कर पूर्ण स्वतंत्रता की मांग करना। आगे इसी गुट के दबाव के परिणामस्वरूप 1929 के लाहौर अधिवेशन मे कांग्रेस ने पूर्ण स्वतंत्रता के प्रस्ताव को स्वीकृति दे दी।

For More Book Download Here - http://GKTrickHindi.com Scanned by CamScanner

कांग्रेस का त्रिपुरी संकट

- सुभाष चंद्र बोस को 1938 ई. में सर्वसम्मति से कांग्रेस के हरिपुरा सम्मेलन के लिए अध्यक्ष चुना गया था।

⇒ सुभाष चन्द्र बोस ने 1939 में पुनः अध्यक्ष पद की दावेदारी यह कहते हुए कर दी कि कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में वही नई विचारधाराओं का प्रतिनिधित्व करते हैं काम बार कांग्रेस का गैर वामपंथी गुट उनके विरुद्ध हो गया।

⇒ कांग्रेस के गैर वामपंथी गुट में कृपलानी, राजेन्द्र प्रसाद तथा सरदार पटेल थे तथा इन्हें गांधीजी का समर्थन था।

⇒ दक्षिणीपंथी गुट ने पहले मौलाना कलाम को उम्मीदवार बनाया परन्तु उनके इन्कार करने पर पट्टाभिसीतारमैया को उम्मीदवार बनाया गया।

⇒ गांधीजी की इसमें सहमति थी परन्तु अध्यक्षीय चुनाव में सुभाषचन्द्र बोस ने सीतारमैया को 1377 के मुकाबले 1580 मतों से पराजित किया।

For More Book Download Here - http://GKTrickHindi.com Scanned by CamScanner

⇒ गांधी जी ने इस स्थिति से दुखी होकर कहा कि सीतारमैया की हार मेरी हार है। अतः कांग्रेस कार्यकारिणी के अधिकांश सदस्यों ने सुभाष के साथ जाने से मना कर दिया।

⇒ इसकी वजह से सुभाषचन्द्र बोस ने अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे दिया तथा राजेन्द्र प्रसाद को अध्यक्ष बनाया गया। इसके कुछ ही दिनों के पश्चात कांग्रेस की केन्द्रीय अनुशासन समिति ने सुभाष चन्द्र बोस को तीन वर्षों के लिए कांग्रेस से निष्कासित कर दिया।

देशी रियासत के आन्दोलन के प्रति कांग्रेस की नीति

• कांग्रेस ने सर्वप्रथम 1920 ई. के नागपुर अधिवेशन में देशी रियासत के प्रति अपनी नीति घोषित की। इस अधिवेशन में कांग्रेस ने देशी रियासतों की जनता को कांग्रेस सदस्य बनने की अनुमति दी परन्तु रियासतों के अंदर कांग्रेस के नाम पर आन्दोलन चलाने की अनुमति नहीं दी।

For More Book Download Here - http://GKTrickHindi.com Scanned by CamScanner

- 1929 ई. के लाहौर अधिवेशन मे घोषणा भी की देशी रियासत भी शेष भारत से पृथक नही है, कांग्रेस ने 1938 ई के हरिपुरा अधिवेशन मे पहली बार घोषित किया की पूर्ण स्वराज के अन्तर्गत रजवाडे तथा ब्रिटिश भारत दोनों आते है।
- 1939 के त्रिपुरी अधिवेशन मे देशी रियासत मे भी कांग्रेस कार्यकर्ताओं को आन्दोलन चलाने की अनुमति दे दी।
- 1939 में ही लुधियाना स्टेट पिपुल्स कांफ्रेंस के अध्यक्ष के रूप मे जवाहर लाल नेहरु का चुनाव किया गया।
- गांधी जी ने देशी रजवाडे मे फैलते जन आन्दोलन को नेतृत्व प्रदान करने का निश्चय 1939 मे लिया। इस साल इन्होने पहली बार अपने निकट सहयोगी तथा व्यापारी जमनालाल बजाज को जयपुर मे एक सत्याग्रह करने की अनुमति दी तथा स्वंय वल्लभ भाई पटेल के साथ राजकोट रियासत मे चल रहे आन्दोलन को व्यक्तिगत तौर पर उपस्थित होकर हस्तक्षेप किया।

For More Book Download Here - http://GKTrickHindi.com Scanned by CamScanner

- राजकोट में स्थानीय प्रजा परिषद ने यू. एन. ढेबर के नेतृत्व में यहां आन्दोलन प्रारम्भ कर रखा था
- फरवरी 1939ई. में कस्तूरबा तथा मणिबेन पटेल ने गिरफ्तारी दी।
- गांधीजी ने भी 3 march ई से अनशन प्रारम्भ किया परंतु बाद में उन्होंने स्वयं को इस आन्दोलन से इस तर्क के आधार पर अलग कर लिया कि उनका यहां अनशन करना अहिंसा के सिद्धान्त के प्रतिकूल होगा।
- मैसूर में भी टी. आच्यम के नेतृत्व में प्रजा मंडल आन्दोलन आगे बढ़ा।
- उड़ीसा के धेनकनाल रियासत में C.S.P के नेता नवकृष्ण चौधरी ने सत्याग्रह का नेतृत्व किया। इस प्रकार कांग्रेस ने नतिम रूप से देशी रजवाड़ों को भी शेष भारत का अंग स्वीकार किया।

मुस्लिम लीग का विभाजन संबंधी प्रस्ताव

- 1937 में हुए चुनावों के परिणामों से मुस्लिम लीग और विशेषकर ~~[illegible]~~ जिन्ना को काफी निराशा हुई।

For More Book Download Here - http://GKTrickHindi.com Scanned by CamScanner

• मुस्लिम लीग को किसी भी प्रान्त मे बहुमत प्राप्त नही कर पायी। यहां तक कि मुस्लिम – बहुलता वाले प्रान्त पंजाब और बंगाल में भी इसे बहुमत नही मिल सका।

→ 1928 से ही जिन्हा ने कांग्रेस के साथ सहयोग करना बंद कर दिया और लंदन आकर 1932 में वकालत शुरू कर दी।

→ 1935 में वापस लौटने के बाद मुख्यतः चुनावी परिणामों को देखते हुए जिन्ना के नेतृत्व मे मुस्लिम लीग कांग्रेस की घोर विरोधी हो गई। उसने प्रचार शुरू कर दिया कि मुस्लिम अल्पसंख्यकों के बहुसंख्यक हिन्दुओं मे समा जाने का खतरा है।

→ एक और कांग्रेस ने मूलगामी कृषि कार्यक्रम अपना लिया था, इसरी और जगह – जगह कृषक आन्दोलन शुरू होते थे। इस कारण जमींदार और सूदखोर अपने हितो की रक्षा के लिए साम्प्रदायिक पार्टियों को अपना समर्थन देने लगे।

→ 1940 मे मुस्लिम लीग ने एक प्रस्ताव पारित करके मांग की कि स्वाधीनता के बाद देश के दो भाग कर दिए जाएं।

For More Book Download Here - http://GKTrickHindi.com Scanned by CamScanner

• 1940 के पाकिस्तान प्रस्ताव का मसविदा सिकंदर हयात खान ने तैयार किया था। फजलुल हक ने कुछ संशोधन के साथ इसे प्रस्तुत किया था तथा खलिकुज्जमा ने इसे स्वीकार किया।

अखिल भारतीय हिन्दु महासभा

• हिन्दु सभा नाम से 1909 मे पंजाब मे यु. एन. मुखर्जी एव लालचंद ने एक संगठन की स्थापना की।

• इस संगठन का उद्देश्य हिन्दु धर्म एव अनुयायियों के संरक्षण तक ~~...~~ सीमित था।

→ 1915 मे कासिम बाजार के महाराज मनीन्द्र चंद्र नंदी की अध्यक्षता मे अखिल भारतीय हिन्दु महासभा का गठन किया गया। इसके प्रमुख नेताओ मे मदनमोहन मालवीय, लाजपराय एवं मुकुंदराव जयकर जैसे नेता थे।

→ पहले हिन्दु धर्म प्रचार तक सीमित रहनेवाला यह संगठन उस समय राजनैतिक स्वरूप धारण कर लिया जब 1938 मे वी. डी. सावरकर इसके अध्यक्ष बने।

For More Book Download Here - http://GKTrickHindi.com Scanned by CamScanner

- कालांतर मे यह मुस्लिम लीग का प्रतिक्रियात्मक संगठन बन गया और भारत विभाजन के लिए पृष्ठभूमि तैयार करने मे मदद किया। इसके नेताओ ने भी मुस्लिम लीग की ही तरह अलग 'हिंदु राष्ट्र' की मांग की।

प्रांतीय चुनाव तथा सरकारों का गठन (1937) :-

- 1935 के एक्ट के प्रावधान के द्वारा 1937 ई. मे प्रांतीय चुनाव हुए। इस चुनाव मे कांग्रेस को कुल 11 प्रान्तो मे से 5 प्रान्तों मे स्पष्ट बहुमत प्राप्त हुआ। ये प्रान्त थे - Bihar, Udisa, संयुक्त प्रांत, मध्य प्रांत तथा मद्रास। इसके अतिरिक्त बम्बई मे भी स्पष्ट बहुमत प्राप्त हुआ।
- 482 मुस्लिम सीटो मे से कांग्रेस ने 58 सीटों पर चुनाव लड़ा था जिसमे उसे 26 सीटों पर विजय प्राप्त हुई।
- ~~पश्चिमी~~ पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत मे मुस्लिम लीग को एक भी सीट नही मिली तथा पंजाब के 84 मुस्लिम आरक्षित सीट मे से केवल 2 तथा सिंध के 33 आरक्षित सीटों मे से मात्र 3 पर विजय प्राप्त हो सकी।

For More Book Download Here - http://GKTrickHindi.com Scanned by CamScanner

- अनुसूचित जातियों के लिए आरक्षित सीटों पर कांग्रेस का कब्जा हुआ सिवाय बम्बई के जहां पर अम्बेडकर की इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी ने हरिजनों के लिए आरक्षित 15 में से 13 सीटें जीत ली।
- July 1937 में कांग्रेस ने संयुक्त प्रान्त, मध्य प्रान्त, उड़ीसा, बिहार, मद्रास तथा बम्बई में सरकार का गठन किया। बाद में असम तथा उत्तरी - पश्चिमी सीमा प्रान्त में भी कांग्रेस का शासन स्थापित हुआ।
- पंजाब में यूनियनिस्ट पार्टी तथा मुस्लिम लीग ने मिलकर संयुक्त सरकार का गठन किया, लेकिन आगे चलकर मुस्लिम लीग ने सिकन्दर हयात खां के प्रधानमंत्रित्व काल में यूनियनिस्ट पार्टी के मुस्लिम वर्ग पर अपना प्रभाव कायम कर लिया। इससे यह सरकार बिना किसी व्यवधान के मार्च, 1947 तक कार्य करती रही।

For More Book Download Here - http://GKTrickHindi.com
Scanned by CamScanner

- बंगाल में कृषक प्रजा पार्टी तथा मुस्लिम लीग को संयुक्त सरकार सत्ता मे आई, लेकिन बाद में मुस्लिम लीग का मंत्रिमंडल गठित हुआ, जो 14 August 1947 तक सत्ता में रहा, जिसके प्रधानमंत्री एच. एम. सुहरावर्दी थे।
- सिन्ध मे 1937 से 47 के दशक के दौरान भिन्न-भिन्न नेताओं के अधीन गैर-कानूनी मंत्रिमण्डल बना रहा। इनके दो प्रधानमंत्रियों गुलाम हुसैन हिदायतुल्ला तथा अल्लाह बख्श के कांग्रेस से साथ गहरे संबन्ध थे।

प्रांत	कांग्रेसी प्रधानमंत्री
बम्बई	बी. जी. खेर
यू. पी	गोविन्द वल्लभ पंत
मद्रास	सी. राजगोपालाचारी
उड़ीसा	हरेकृष्णा महताब
स्पी. पी.	डॉ. खरे
बिहार	श्री. कृष्णा सिंह
उत्तर पश्चिमी सीमांत प्रांत	डॉ. खान साहब

15.11

Knowledge is wealth

For More Book Download Here - http://GKTrickHindi.com Scanned by CamScanner

द्वितीय विश्वयुद्ध एवं कांग्रेस की प्रतिक्रिया

द्वितीय विश्वयुद्ध के समय भारतीय राजनीति को प्रभावित करने वाली तीन शक्तियां थी

1. कांग्रेस
2. लीग
3. ब्रिटिश सरकार

- 1939 मे जब ब्रिटेन ने एकपक्षीय घोषणा करके भारत को द्वितीय विश्व युद्ध मे झोंक दिया, तब इसके विरोध मे कांग्रेस मंत्रालयों ने त्यागपत्र दे दिया।
- 1939 मे अक्टूबर मे जिस दिन कांग्रेसी सरकार ने त्यागपत्र दिया था, उस दिन मुस्लिम लीग ने मुक्ति दिवस के रूप मे मनाया था।
- प्रांतीय सरकार के समुचे कार्यकाल मे मुस्लिमलीग कांग्रेसी सरकार के खिलाफ दुष्प्रचार करती रही।
- (पीरपुर) पीरपुर रिपोर्ट 1938 बिहार सरकार पर शरीफ रिपोर्ट 1939 तथा फजलुल हक की मुस्लिम सफरिंग अंडर कांग्रेस रूल रिपोर्ट (December — 1939) इसी का नतीजा था।

For More Book Download Here - http://GKTrickHindi.com Scanned by CamScanner

महत्वपूर्ण स्मरणीय तथ्य

- कांग्रेस ने देशी रजवाड़ों में अपना प्रथम आन्दोलन राजकोट में चलाया था।
- बंगाल में कृषक प्रजा पार्टी के फजलुल हक ने मुस्लिम लीग के साथ मिलकर सरकार बनाई थी।
- कांग्रेस ने वर्धा में कांग्रेस की कार्यसमिति की बैठक में पद स्वीकार करने की अनुमति दी थी।
- सुभाष चन्द्र बोस ने 1939 में कांग्रेस के अध्यक्ष पद से त्याग पत्र देने के पश्चात फॉरवर्ड ब्लॉक नामक पार्टी की स्थापना की थी।
- May 1932 में सविनय अवज्ञा के दौरान मध्य प्रांत के बैतूल में गंजन गोंड तथा चैत्र कोरकू ने वन सत्याग्रह किया था।
- सविनय अवज्ञा ~~आन्दोलन~~ के दौरान बम्बई में मिल मालिकों ने जापानी कंपनियों के साथ होने वाली स्पर्धा से डर कर ~~को~~ लंकाशायर के व्यापारियों के साथ मिल कर लीस - मोदी पैक्ट किया था।
- 1931 ई. में करांची के कांग्रेस अधिवेशन में मूल अधिकार सहित 20 सूत्रीय समाजवादी कार्यक्रम को अपनाया गया था।

For More Book Download Here - http://GKTrickHindi.com Scanned by CamScanner

- सविनय अवज्ञा [redacted] के दौरान छोटानागपुर क्षेत्र मे आदिवासी नेता सोवरा मांझी तथा बोंगा मांझी आन्दोलन का नेतृत्व कर रहे थे।
- 1927 ई. मे जवाहरलाल नेहरू ने मद्रास मे एक [redacted] रिपब्लिकन पार्टी की अध्यक्षता की थी।
- पहली बार 26 जनवरी 1930 को [redacted] सम्पूर्ण भारत मे स्वतन्त्रता दिवस मनाया गया था। इससे पहले 31 दिसम्बर 1929 को रावी नदी के तट पर लाहौर मे तिरंगा झंडा फहराया था।
- जिन्ना ने 1919 ई. मे रौलेट एक्ट के विरोध मे केन्द्रीय परिषद से इस्तिफा दिया था।
- 1920 ई. मे कांग्रेस से [redacted] असहयोग प्रस्ताव पारित होने पर सुरेन्द्र नाथ बनर्जी, सरोजिनी [redacted] नायडू, विपिन चन्द्र पाल, सी शंकरन नायर तथा जिन्ना ने इस्तीफा दिया था।
- 1909 ई. मे U.N. मुखर्जी तथा लाल चंद ने पंजाब हिन्दू महासभा की स्थापना की थी जिसका प्रथम सम्मेलन [redacted] बनारस मे कासिम बाजार के राजा के संरक्षण मे हुआ था।
- 1925 ई. मे R.S.S की स्थापना हुई। इसकी स्थापना हेडगेवार ने नागपुर में की थी।

For More Book Download Here - http://GKTrickHindi.com Scanned by CamScanner

- वी.डी. सावरकर 1938 ई. में हिन्दु महासभा के अध्यक्ष बने थे। इसी वर्ष R.S.S के अध्यक्ष गोलवलकर बने थे।
- ऑल इंडिया स्टेट पिपुल्स कांग्रेस की स्थापना बलवंतराय मेहता के अधीन 1927 ई. में हुई थी।

चेंबर आफ प्रिंसेज

- 1921 में चेंबर आफ प्रिंसेज की स्थापना इसलिए की गई ताकि महाराजे आपस में मिल - बैठ कर ब्रिटिश मार्ग-दर्शन में अपने साझे हित के विषयों पर विचार कर सकें।
- भारत सरकार कानून, 1935 में भी प्रस्ताव संघीय ढाँचे की योजना इस प्रकार रखी गई थी कि राष्ट्रवादि शक्तियों का नियंत्रण बना रहे। इसमें यह व्यवस्था भी थी कि निचले सदन में कुल सीटों के 1/3 भाग तथा ऊपरी सदन में कुल सीटों के 2/5 भाग पर रजवाड़ों का प्रतिनिधित्व रहेगा।
- अनेक रजवाड़ों की जनता अब जनतांत्रिक अधिकारों तथा ~~लोक~~ लोकप्रिय सरकारों की मांग को लेकर आंदोलन करने लगी। विभिन्न रजवाड़ों में राजनीतिक गतिविधियों के तालमेल के लिए दिसम्बर 1927 में "ऑल इंडिया स्टेट्स पीपुल्स कांग्रेस" की स्थापना की गई। इस संगठन का मुख्यालय बम्बई में स्थापित किया गया। इसके पहले अधिवेशन में विभिन्न रियासतों के 700 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस सम्मेलन के आयोजन में प्रमुख भूमिका बलवंतराय मेहता ने निभाई जो ऑल इंडिया स्टेट पिपुल कांग्रेस के सचिव थे। 15.15

गया था। ...

बनाया गया। 16.5

For More Book Download Here - http://GKTrickHindi.com Scanned by CamScanner